अध्याय
6

अर्थ के अनुसार विशेष वाक्य

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद/प्रकार सर्वमान्य एवं सर्वस्वीकृत हैं। इस अध्याय में वाक्य के इन सभी भेदों के मूल लक्षण एवं वाक्य परिवर्तन के नियम उदाहरण के साथ बताए गए हैं।

6.1 सकारात्मक (विधिवाचक) वाक्य

सकारात्मक या विधिवाचक या विधानवाचक वाक्य ऐसे वाक्यों को कहा जाता है, जिनमें किसी सामान्य बात के होने का सरल बोध हो।

जैसे-

(i) उसने सब उपाय किये।
(ii) मैं लेखन करता हूँ।
(iii) कैसा सुंदर दृश्य है!
(iv) भारत एक देश है।
(v) दशरथ अयोध्या के राजा थे।
(vi) राम के पिता का नाम दशरथ था।

सकारात्मक/विधिवाचक वाक्य से नकारात्मक निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन संबंधी प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं-

6.2 नकारात्मक (निषेधवाचक) वाक्य

नकारात्मक या निषेधवाचक वाक्य, ऐसे वाक्यों को कहा जाता है जिनमें किसी कार्य के न होने (निषेध) का बोध होता है। साधारणत: ऐसे वाक्यों में निषेध सूचक/बोधक शब्द/वर्ण **'नहीं', 'न', 'मत'** आदि का प्रयोग होता है।

जैसे-

(i) राम घर नहीं गया।
(ii) तुमने कार्य नहीं किया।
(iii) मैंने पढ़ाई पूरी नहीं की।
(iv) तुमने मेरी किताब नहीं दी।
(v) उसने कुछ उपाय नहीं किये।

नकारात्मक/निषेधवाचक वाक्य से सकारात्मक/विधिवाचक वाक्य में परिवर्तन से संबंधित महत्त्वपूर्ण उदाहरण निम्नलिखित हैं-

सकारात्मक/विधिवाचक वाक्य से नकारात्मक/निषेधवाचक वाक्य में परिवर्तन	
विधिवाचक वाक्य	वह मुझसे श्रेष्ठ है।
निषेधवाचक वाक्य	मैं उससे श्रेष्ठ नहीं हूँ।
विधिवाचक वाक्य	सारे कर्मी अधिकारी के विचार से सहमत हैं।
निषेधवाचक वाक्य	सारे कर्मी अधिकारी के विचार से असहमत नहीं हैं।
विधिवाचक वाक्य	मुझे पूर्ण विश्वास था कि पत्र अशोक ने नहीं लिखा होगा।
निषेधवाचक वाक्य	मुझे विश्वास नहीं था कि अशोक ने पत्र लिखा होगा।
विधिवाचक वाक्य	मुझे अत्यधिक खुशी है कि तुम्हें पिता बनने का सौभाग्य मिला।
निषेधवाचक वाक्य	मुझे अत्यधिक खुशी है कि तुम पिता बनने के सौभाग्य से वंचित नहीं रहे।
विधिवाचक वाक्य	संत सदैव सत्य बोलते हैं।
निषेधवाचक वाक्य	संत कभी भी असत्य नहीं बोलते हैं।
विधिवाचक वाक्य	उत्तर भारतीय लोग दक्षिण भारतवासियों से ज़्यादा गोरे होते हैं।
निषेधवाचक वाक्य	उत्तर भारतीय लोग दक्षिण भारतवासियों से ज़्यादा काले नहीं होते हैं।
विधिवाचक वाक्य	मेरे पास दो-चार पुस्तकें ही हैं।
निषेधवाचक वाक्य	मेरे पास दो-चार पुस्तकों से अधिक नहीं हैं।